55

# सूफी कवि मंझन कृत 'मधुमालती'

**Dr. Ashokkumar Shankarlal Patel**
Associate Professor
Swaminarayan Arts College Ahmedabad, Gujarat

**सारांश :**

मंझन हिंदी सूफी प्रेमाख्यान परंपरा के कवि थे । मंझन के जीवनवृत्त के विषय में उसकी एकमात्र कृति 'मधुमालती' में संकेतित आत्मोल्लेख पर ही निर्भर रहना पड़ता है । मंझन ने 'मधुमालती' की रचना का प्रारंभ उसी वर्ष किया, जिस वर्ष सलीम अपने पिता शेरशाह सूर की मृत्यु (952 हिजरी सन् 1545 ई0) के पश्चात् शासक बना । इसीलिए सूफी-काव्य-परंपरा के अनुसार कवि ने शाह-ए-वक्त सलीम शाह सूर की अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा की है । 'मधुमालती' का रचनाकाल 952 हिजरी (सन् 1545 ई०) है । इसमें कनकगिरि नगर के राजा सुरजभान के पुत्र मनोहर और महारस नगर नरेश विक्रमराय की कन्या मधुमालती की सुखांत प्रेमकहानी कही गई है । कवि स्वीकारोक्ति के अनुसार जो सभी रसों का राजा (श्रृंगार रस) है उसी का वर्णन किया गया है, जिसकी पृष्ठभूमि में प्रेम, ज्ञान और योग है । उनके जीवनदर्शन की मूलभित्ति ज्ञान, योग संपन्न प्रेम है। प्रेम की जैसी असाधारण और पूर्ण व्यंजना मंझन ने की है वैसी किसी अन्य हिंदी सूफी कवि ने नहीं की। उनकी कविता प्रसादगुण युक्त है । 'मधुमालती' कथा का मूल स्रोत ढूँढ निकालना कठिन काम है। किन्तु स्वयं मंझन ने एक स्थान पर इस कथा की उत्पत्ति (मूलस्रोत) को द्वापर में बताया है । "आदि कथा द्वापर महँ भई । / कलिजुग मो भाखा केकै गाई ।।" इससे स्पष्ट है कि मंझन को द्वापर की किसी पौराणिक कथा का ज्ञान था । यह कथा सम्भव है संस्कृत में रही हो क्योंकि कलियुग में 'भाखा' अर्थात् हिन्दी में अपने द्वारा लिखे जाने की बात भी उन्होंने कही है । कवि ने नायक और नायिका के अतिरिक्त उपनायक और उपनायिका की भी योजना करके कथा को तो विस्तृत किया ही है, साथ ही प्रेमा और ताराचंद के चरित्र द्वारा सच्ची सहानुभूति, अपूर्व संयम और नि:स्वार्थ भाव का चित्र दिखाया है । जन्म जन्मांतर और योन्यंतर के बीच प्रेम की अखंडता दिखाकर मंझन ने प्रेमतत्व की व्यापकता और नित्यता का आभास दिखाया है।

**बीज शब्द :**

आत्मोल्लेख, हिजरी, सूफी-काव्य-परंपरा, प्रतिलिपि, फारसी लिपि, रहस्यमय प्रेमसूत्र, प्रेममूर्ति

---

**प्रस्तावना :**

मंझन हिंदी सूफी प्रेमाख्यान परंपरा के कवि थे। मंझन के जीवनवृत्त के विषय में उसकी एकमात्र कृति 'मधुमालती' में संकेतित आत्मोल्लेख पर ही निर्भर रहना पड़ता है । मंझन ने उक्त कृति में शहएवक्त सलीम शाह सूर, अपने गुरू शेख मुहम्मद गौस एवं खिज्र खाँ का गुणानुवाद और अपने निवासस्थान तथा 'मधुमालती' की रचना के विषय का उल्लेख किया है । मंझन ने 'मधुमालती' की रचना का प्रारंभ उसी वर्ष किया, जिस वर्ष सलीम अपने पिता

शेरशाह सूर की मृत्यु (952 हिजरी सन् 1545 ई0) के पश्चात् शासक बना। इसीलिए सूफी-काव्य-परंपरा के अनुसार कवि ने शाह-ए-वक्त सलीम शाह सूर की अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा की है।

शत्तारी संप्रदायी सूफी संत शेख मुहम्मद गौस मंझन के गुरू थे। जिनका पर्याप्त प्रभाव बाबर, हुमायूँ और अकबर पर भी था। बड़ी निष्ठा और बड़े विस्तार के साथ कवि ने अपने इस गुरू की सिद्धियों की बड़ाई की है। उक्त उल्लेख को देखे हुए मंझन ऐतिहासिक व्यक्ति खिज्र खाँ (नौंना) के कृपापात्र जान पड़ते हैं। मंझन जाति के मुसलमान थे। 'मधुमालती' का रचनाकाल 952 हिजरी (सन् 1545 ई०) है। इसमें कनकगिरि नगर के राजा सुरजभान के पुत्र मनोहर और महारस नगर नरेश विक्रमराय की कन्या मधुमालती की सुखांत प्रेमकहानी कही गई है। इसमें "जो सभ रस महँ राउ रस ताकर करौं बखान"

कवि स्वीकारोक्ति के अनुसार जो सभी रसों का राजा (श्रृंगार रस) है उसी का वर्णन किया गया है, जिसकी पृष्ठभूमि में प्रेम, ज्ञान और योग है। उनके जीवनदर्शन की मूलभित्ति ज्ञान, योग संपन्न प्रेम है। प्रेम की जैसी असाधारण और पूर्ण व्यंजना मंझन ने की है वैसी किसी अन्य हिंदी सूफी कवि ने नहीं की। उनकी कविता प्रसादगुण युक्त है। मंझन कृत 'मधुमालती' का प्रथम परिचय स्व० श्रीजगन्मोहन वर्मा ने सन् १६१२ में प्रस्तुत किया था। इसके पूर्व हिन्दी-जगत को मधुमालती की किसी भी हस्तलिखित प्रति का पता नहीं था किन्तु अब कई प्रतियों की सूचना मिल चुकी है।

**(क) मधुमालती की प्रतियाँ :**

अब तक मधुमालती की चार प्रतियाँ उपलब्ध हो चुकी हैं-

(१) 'भारत-कला-भवन' की फारसी लिपि में लिखित प्रति

यह खंण्डित प्रति आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय को संवत् १९६५ में बनारस की गुदड़ी बाजार से प्राप्त हुई थी।

(२) 'भारत-कला-भवन' की नागरी लिपि में लिखित प्रति

यह माधोदासु कोहिली द्वारा लिखी गई थी। इस प्रति का प्रथम उल्लेख आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय ने अपने लेख में किया था। डा० कमल कुलश्रेष्ठ ने इसे नागरी प्रचारिणी सभा में सुरक्षित बताया है। यह प्रति अपूर्ण है। भारत कला भवन के अध्यक्ष श्री रायकृष्णदास जी ने इस प्रति की एक अन्य प्रतिलिपि अगहन सुदी ११ शुक्रवार संवत् १६६६ में बटुकप्रसाद कायस्थ द्वारा कराई है। इसमें ७६ पत्र हैं।

(३) रामपुर लाइब्रेरी की प्रति

यह प्रति फारसी लिपि में है। इसमें २४६ पत्र हैं। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ हैं। इसका प्रथम पत्र गायब है अतः यह प्रति भी खण्डित है।

(४) एकडला से प्राप्त प्रति

४ जुलाई सन् १९५५ को मुझे जनपद फतेहपुर के ग्राम एकडला के निवासी रावत ओउम प्रकाश सिंह के यहाँ से मधुमालती की सम्पूर्ण प्रति कैथी लिपि में लिखी हुई प्राप्त हुई।

(ख) मधुमालती का उल्लेख

जायसी, बनारसीदास जैन, दुखहरनदास तथा कवि जान सबने अपनी अपनी रचनाओं में 'मधुमालती' का उल्लेख किया है। जायसी ने "पद्मावत" में लिखा है :-

"साधा कुँवर मनोहर जोगू।
मधुमालति कहँ कीन्ह बियोगू॥"

बनारसीदास जैन ने अपनी आत्मः कथा "अर्द्धकथानक" में लिखा है:

"तब घर में बैठे रहें, जाहिं न हाट बजार।
मधुमालति मिरगावति, पोथी दोइ उदार॥
ते बाँचहि रजनी समै, आवहिं नर दस बीस।
गावें अरु बातें करहिं, नित उठि देहिं असीस॥"

**(ग) 'मधुमालती' की परम्परा : अन्य रचनाएँ :**

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, मंझन कृत 'मधुमालती' के अलावा इसी नाम की अन्य रचनाएँ भी पाई जाती हैं। इनमें से कुछ रचनाएँ मंझन के पूर्व की हैं और कुछ उनके अनुसरण पर लिखी गई हैं। ये रचनाएँ न केवल हिन्दी में ही प्राप्त हैं वरन् बंगला और गुजराती में भी पाई जाती हैं संस्कृत साहित्य में भवभूति कविकृत 'मालती माधव' नामक रचना पाई जाती है किन्तु इस कथा से मंझन या अन्य कवियों की रचनाओं में नायक 'मधु' और नायिका 'मालती' के नामों के अतिरिक्त किसी प्रकार का भी साम्य नहीं पाया जाता। मधुमालती नामक अन्य रचनाएँ निम्न हैं:

१. चतुर्भुज दास कृत मधुमालती।
२. जानकवि कृत मधुकर मालती।
३. बँगला साहित्य में उपलब्ध कथाएँ।
४. गुजराती साहित्य में उपलब्ध कथाएँ।
५. सिंहासन बत्तीसी में नवीं पुतली मधुमालती की कथा हैं।

**(१) रचना का मूलस्रोत :**

'मधुमालती' कथा का मूल स्रोत ढूँढ निकालना कठिन काम है। किन्तु स्वयं मंझन ने एक स्थान पर इस कथा की उत्पत्ति (मूलस्रोत) को द्वापर में बताया है।

"आदि कथा द्वापर महँ भई।
कलिजुग मो भाखा केकै गाई॥"

इससे स्पष्ट है कि मंझन को द्वापर की किसी पौराणिक कथा का ज्ञान था। यह कथा सम्भव है संस्कृत में रही हो क्योंकि कलियुग में 'भाखा' अर्थात् हिन्दी में अपने द्वारा लिखे जाने की बात भी उन्होंने कही है।

**(२) मधुमालती का उद्देश्य :**

मंझन ने 'मधुमालती' की रचना 'स्वान्त:सुखाय' की। उन्होंने जो कुछ भी देखा सुना था और उन्हें जो भी प्रिय था, सब कुछ इसमें रख दिया।

**मंझन कृत मधुमालती की कथा (कथासार) :**

कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर नामक एक सोए हुए राजकुमार को अप्सराएँ रातोंरात महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की चित्रसारी में रख आईं। वहाँ जागने पर दोनों का साक्षात्कार हुआ और दोनों एक दूसरे पर मोहित हो गए। पूछने पर मनोहर ने अपना परिचय दिया और कहा 'मेरा अनुराग तुम्हारे ऊपर कई जन्मों का है इससे जिस दिन मैं इस संसार में आया उसी दिन से तुम्हारा प्रेम मेरे हृदय में उत्पन्न हुआ।'

बातचीत करते करते दोनों एक साथ सो गए और अप्सराएँ राजकुमार को उठाकर फिर उसके घर पर रख आईं। दोनों जब अपने अपने स्थान पर जगे तब प्रेम में बहुत व्याकुल हुए। राजकुमार वियोग से विकल होकर घर से निकल पड़ा और उसने समुद्र मार्ग से यात्रा की। मार्ग में तूफ़ान आया जिसमें इष्ट मित्र इधर उधर बह गए। राजकुमार एक पटरे पर बहता हुआ एक जंगल में जा लगा।

जहाँ एक स्थान पर एक सुंदर स्त्री पलँग पर लेटी दिखाई पड़ी। पूछने पर जान पड़ा कि वह चितबिसरामपुर के राजा चित्रसेन की कुमारी प्रेमा थी, जिसे एक राक्षस उठा लाया था। मनोहर कुमार ने उस राक्षस को मारकर प्रेमा का उध्दार किया। प्रेमा ने मधुमालती का पता बता कर कहा कि मेरी वह सखी है। मैं उसे तुझसे मिला दूँगी। मनोहर को लिए हुए प्रेमा अपने पिता के नगर में आई। मनोहर के उपकार को सुनकर प्रेमा का पिता उसका विवाह मनोहर के साथ करना चाहता है। पर प्रेमा यह कहकर अस्वीकार करती है कि मनोहर मेरा भाई है और मैंने उसे उसकी प्रेमपात्री मधुमालती से मिलाने का वचन दिया है।

**कथा विस्तार :**

दूसरे दिन मधुमालती अपनी माता रूपमंजरी के साथ प्रेमा के घर आई और प्रेमा ने उसके साथ मनोहर कुमार का मिलाप करा दिया। सबेरे रूपमंजरी ने चित्रसारी में जाकर मधुमालती को मनोहर के साथ पाया। जगने पर मनोहर ने तो अपने को दूसरे स्थान में पाया और रूपमंजरी अपनी कन्या को भला बुरा कहकर मनोहर का प्रेम छोड़ने को कहने लगी। जब उसने न माना तब माता ने शाप दिया कि तू पक्षी हो जा। जब वह पक्षी होकर उड़ गई तब माता बहुत पछताने और विलाप करने लगी, पर मधुमालती का कहीं पता न लगा। मधुमालती उड़ती उड़ती बहुत दूर निकल गई।

कुँवर ताराचंद नाम के एक राजकुमार ने उस पक्षी की सुंदरता देख उसे पकड़ना चाहा। मधुमालती को ताराचंद का रूप मनोहर से कुछ मिलता जुलता दिखाई दिया इससे वह कुछ रूक गई और पकड़ ली गई। ताराचंद ने उसे एक सोने के पिंजरे में रखा। एक दिन पक्षी मधुमालती ने प्रेम की सारी कहानी ताराचंद से कह सुनाई जिसे सुनकर उसने प्रतिज्ञा की कि मैं तुझे तेरे प्रियतम मनोहर से अवश्य मिलाऊँगा। अंत में वह उस पिंजरे को लेकर महारस नगर में पहुँचा। मधुमालती की माता अपनी पुत्री को पाकर बहुत प्रसन्न हुई और उसने मंत्र पढ़कर उसके ऊपर जल छिड़का। वह फिर पक्षी से मनुष्य हो गई। मधुमालती के माता पिता ने ताराचंद के साथ मधुमालती का ब्याह करने का विचार प्रकट किया। पर ताराचंद ने कहा कि 'मधुमालती मेरी बहन है और मैंने उससे प्रतिज्ञा की है कि मैं जैसे होगा वैसे मनोहर से मिलाऊँगा।'

मधुमालती की माता सारा हाल लिखकर प्रेमा के पास भेजती है। मधुमालती भी उसे अपने चित्त की दशा लिखती है। वह दोनों पत्रों को लिये हुए दु:ख कर रही थीं कि इतने में उसकी एक सखी आकर संवाद देती है कि राजकुमार मनोहर योगी के वेश में आ पहुँचा है। मधुमालती का पिता अपनी रानी सहित दलबल के साथ राजा चित्रसेन (प्रेमा के पिता) के नगर में जाता है और वहाँ मधुमालती और मनोहर का विवाह हो जाता है। मनोहर, मधुमालती और ताराचंद तीनों बहुत दिनों तक प्रेमा के यहाँ अतिथि रहते हैं।

एक दिन आखेट से लौटने पर ताराचंद, प्रेमा और मधुमालती को एक साथ झूला झूलते देख प्रेमा पर मोहित होकर मूर्च्छित हो जाता है। मधुमालती और उसकी सखियाँ उपचार में लग जाती हैं। इसके आगे प्रति खंडित है। पर कथा के झुकाव से अनुमान होता है कि प्रेमा और ताराचंद का भी विवाह हो गया होगा।

**सूफी प्रेम भावना :**

कवि ने नायक और नायिका के अतिरिक्त उपनायक और उपनायिका की भी योजना करके कथा को तो विस्तृत किया ही है, साथ ही प्रेमा और ताराचंद के चरित्र द्वारा सच्ची सहानुभूति, अपूर्व संयम और नि:स्वार्थ भाव का चित्र दिखाया है। जन्म जन्मांतर और योन्यंतर के बीच प्रेम की अखंडता दिखाकर मंझन ने प्रेमतत्व की व्यापकता और नित्यता का आभास दिखाया है। सूफियों के अनुसार यह सारा जगत् एक ऐसे रहस्यमय प्रेमसूत्र में बँधा है जिसका अवलंबन करके जीव उस प्रेममूर्ति तक पहुँचने का मार्ग पा सकता है।